सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

दोस्त की दुश्मनी

एक बहुत ही घना और हरा-भरा जंगल था जिसका नाम था अमरवन. इस जंगल में सभी जानवर मिल-जुल कर रहते थे, लेकिन जंगल का राजा शेर, केसरिया, हमेशा अकेला रहता था. उसकी शक्ति के कारण कोई भी जानवर उसके पास आने से डरता था. वह बहुत शक्तिशाली था, लेकिन उसका दिल बहुत उदास था. वह चाहता था कि उसका भी कोई सच्चा दोस्त हो, जिसके साथ

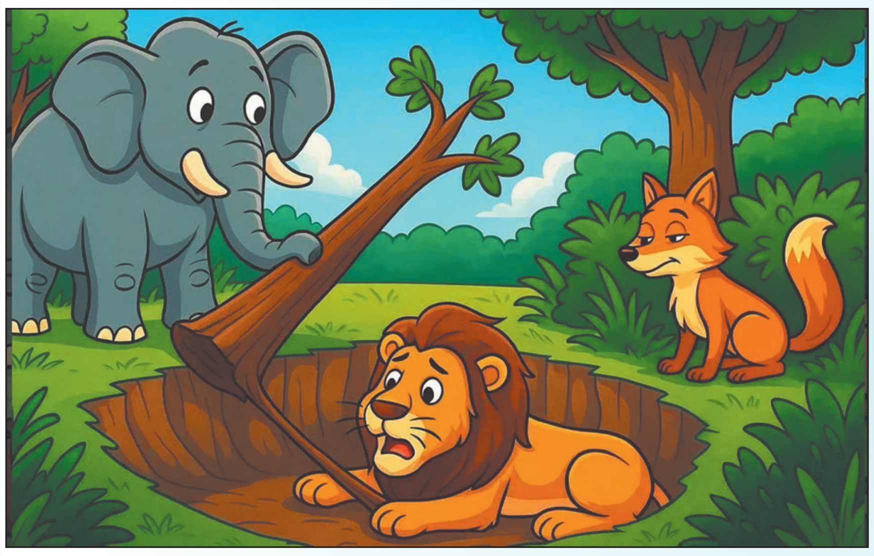

वह दिल की बात कर सके.

इसी जंगल में एक चालाक और धूर्त लोमड़ी रहती थी, जिसका नाम था लोहित. वह अपनी चालाकी के लिए पूरे जंगल में बदनाम थी. एक दिन उसने देखा कि केसरिया राजा बहुत उदास है. लोहित के मन में एक बुरी योजना आई. उसने सोचा, अगर मैं राजा का दोस्त बन जाऊँ तो मैं आसानी से सारे जानवरों पर राज कर पाऊँगा और मुझे शिकार भी नहीं करना पड़ेगा.

लोहित धीरे-धीरे केसरिया के पास गया और बहुत ही आदर से बोला, राजा, आप इतने उदास क्यों हैं? आप तो जंगल के राजा हैं. केसरिया ने गहरी साँस ली और बोला, मैं राजा हूँ, पर मेरे पास कोई दोस्त नहीं है. सब मुझसे डरते हैं. लोहित ने तुरंत इस मौक़े का फ़ायदा उठाया. उसने कहा, राजा, आप चिंता न करें. मैं आपका दोस्त बनूँगा. मैं जानता हूँ कि सच्चा दोस्त क्या होता है.

केसरिया को लोहित की बातें सुनकर बहुत अच्छा लगा. उसने कभी किसी से इतनी मीठी बातें नहीं सुनी थीं. जल्द ही, वे दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन गए. लोहित अपनी चालाकी से केसरिया को कहानियाँ सुनाता और उसे हँसाता था. वह रोज़ाना राजा के लिए स्वादिष्ट शिकार लाता और खुद भी खाता था.

धीरे-धीरे, केसरिया लोहित पर इतना भरोसा करने लगा कि वह अपनी सारी बातें उससे साझा करने लगा. लोहित की चालाकी बढ़ती जा रही थी. अब वह राजा को बाकी जानवरों के खिलाफ़ भड़काने लगा. वह कहता, राजा, वह हाथी तुम्हारी आज्ञा नहीं मानता. वह हिरन तुम्हारी हंसी उड़ा रहा था. केसरिया लोहित की बातों पर भरोसा करने लगा और कई जानवरों को परेशान करने लगा.

जंगल के बाकी जानवर बहुत परेशान हो गए थे. वे जानते थे कि लोहित की चालाकी के कारण राजा बदल गया है. हाथीराज गजराज ने हिम्मत करके राजा से बात करने का फ़ैसला किया. वह केसरिया के पास गया और बोला, महाराज, आप क्यों हम पर इतना क्रोध कर रहे हैं? लोमड़ी आपको हमारे खिलाफ़ भड़का रही है.

केसरिया को बहुत गुस्सा आया. उसने सोचा कि गजराज उसकी और लोहित की दोस्ती पर शक कर रहा है. उसने गजराज को गुस्से में वहाँ से भगा दिया.

लोहित की चालाकी बढ़ती गई. एक दिन उसने राजा से कहा, राजा, हमें भोजन की कमी हो रही है. अगर आप मुझे अपने खाने की जगह बता दें, तो मैं आपके लिए और भी अधिक भोजन ला सकता हूँ. केसरिया ने बिना सोचे-समझे उसे एक गुप्त गुफा का रास्ता बता दिया जहाँ उसने अपना सारा शिकार छिपा रखा था. अगली सुबह, जब केसरिया शिकार के लिए निकला, तो लोहित चुपके से उस गुफा में गया और सारा भोजन चुरा लिया और उसे अपनी गुफा में छिपा दिया.

लोहित ने सारा भोजन चुराकर राजा के लिए एक भयंकर जाल बिछाने की योजना बनाई. उसने राजा को बताया कि जंगल में एक नई जगह पर बहुत सारा शिकार मौजूद है. केसरिया राजा उस पर पूरी तरह से विश्वास करके उस जगह पर चला गया. वहाँ पहुँचते ही वह एक गहरे गड्ढे में फंस गया जिसे लोमड़ी ने पत्तों से छुपा दिया था. राजा ने मदद के लिए दहाड़ा, लेकिन कोई नहीं आया. लोहित दूर खड़ा हँस रहा था. उसने सोचा कि अब वह जंगल का राजा बन जाएगा.

केसरिया को एहसास हुआ कि वह कितना मूर्ख था. उसने एक सच्चे दोस्त की बात नहीं सुनी और एक झूठे दोस्त के जाल में फंस गया. जंगल के सारे जानवर लोमड़ी की चाल को समझ गए थे. सभी ने मिलकर तय किया कि वे राजा की मदद नहीं करेंगे, क्योंकि राजा ने उन पर विश्वास नहीं किया था. लेकिन हाथीराज गजराज का दिल बहुत बड़ा था. वह जानता था कि राजा को अपनी ग़लती का एहसास हो गया होगा. उसने अपनी पत्नी, हथिनीराणी से बात की. उसने कहा, मुझे पता है कि राजा ने हम सब को बहुत परेशान किया है, पर उसका जीवन ख़तरे में है. हम उसे ऐसे अकेला नहीं छोड़ सकते. दोस्ती सिर्फ़ अच्छे समय में नहीं होती, बल्कि मुश्किल समय में भी होती है. हथिनीराणी ने भी उसकी बात का समर्थन किया.

गजराज राजा को ढूंढ़ने के लिए निकल पड़ा. थोड़ी ही देर में, उसने राजा को गड्ढे में फँसा हुआ देखा. राजा ने शरम से अपनी आँखें झुका लीं. उसे लगा कि गजराज अब उसका मज़ाक उड़ाएगा. लेकिन गजराज ने मुस्कुराते हुए कहा, महाराज, आप परेशान न हों. हर इंसान ग़लती करता है. सच्चे दोस्त वही होते हैं जो ग़लती होने पर भी माफ़ी दे देते हैं.

गजराज ने अपनी सूंड़ से एक मज़बूत पेड़ की डाल को तोड़ा और उसे राजा की ओर बढ़ा दिया. राजा ने उस डाल को पकड़ लिया और गजराज ने धीरे-धीरे उसे ऊपर खींच लिया. केसरिया ने गजराज को धन्यवाद दिया और उससे माफ़ी माँगी. उस दिन उसे एहसास हुआ कि सच्ची दोस्ती ताकत में नहीं, बल्कि ईमानदारी, माफ़ी और वफ़ादारी में होती है.

बिंदु मिलाओ

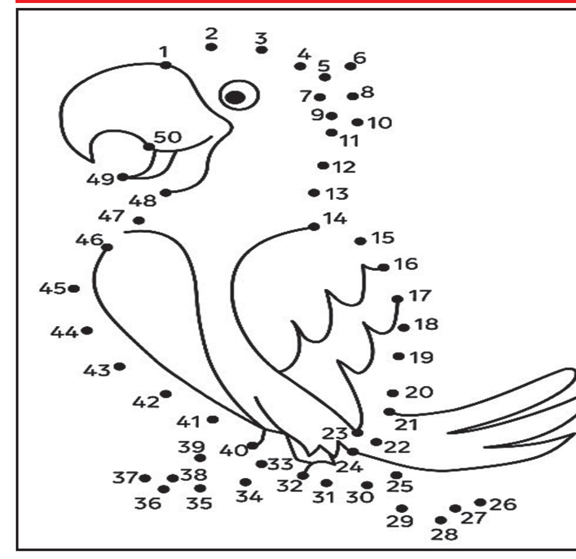

रंग भरो

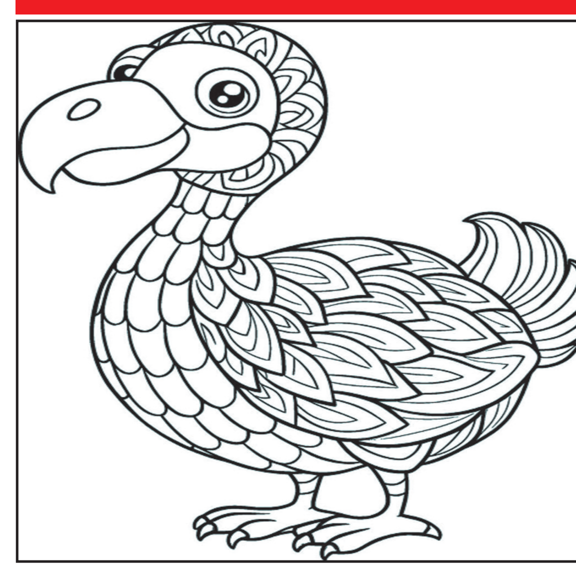

प्रेरक प्रसंग

महान विभूतियों में से एक लओनार्दो दा विंची

लिओनार्दो दा विंची मानव इतिहास की उन महान विभूतियों में से एक हैं जिन्हें पुनर्जागरण काल के सर्वश्रेष्ठ पुरुष कहा जाता है. वह एक ही समय में चित्रकार, मूर्तिकार, वास्तुकार, संगीतज्ञ, इंजीनियर, आविष्कारक और वैज्ञानिक थे. उनकी प्रतिभा इतनी व्यापक और गहन थी कि वे अपने युग से कई सदियों आगे दिखाई देते थे.

लिओनार्दो दा विंची का जन्म 15 अप्रैल 1452 को इटली के टस्कनी के विंची गाँव में हुआ. उनके पिता सेर पिएरो दा विंची फ्लोरेंस में नोटरी (कानूनी सलाहकार) थे और उनकी माता कैटरीना एक साधारण किसान महिला थीं. लिओनार्दो बचपन से ही जिज्ञासु स्वभाव के थे और प्रकृति, संगीत, कला और विज्ञान में गहरी रुचि रखते थे.

शिक्षा और कला का आरंभ- उनके पिता ने उनकी कला-प्रतिभा को पहचानते हुए उन्हें प्रसिद्ध चित्रकार और मूर्तिकार आंद्रेआ डेल वेरोकीयो के पास शिक्षा के लिए भेजा. लिओनार्दो ने इतनी कम उम्र में ही चित्रकला और मूर्तिकला में महारत हासिल कर ली कि वे अपने गुरु को भी पीछे छोड़ने लगे.

चित्रकारी में योगदान- लिओनार्दो दा विंची की चित्रकला ने उन्हें विश्वभर में अमर बना दिया.

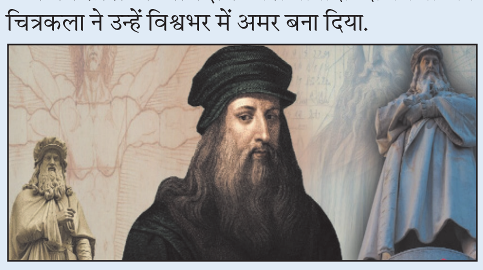

उनकी प्रमुख कृतियाँ है- मोनालिसा- विश्व की सबसे प्रसिद्ध पेंटिंग, जो पेरिस के लौवर संग्रहालय में सुरक्षित है. इसकी रहस्यमयी मुस्कान और जीवंतता आज भी कला प्रेमियों को आश्चर्यचकित करती है.

द लास्ट सपर- यह चित्रण यीशु मसीह और उनके 12 शिष्यों का है, जिसमें यीशु द्वारा कहा गया वाक्य तुममें से एक मुझे धोखा देगा को दर्शाया गया है. यह मिलान के सांता मारिया डेल्ले ग्राज़ी मठ में बनाया गया था.

वर्जिन ऑफ द रॉक्स- इसमें उनकी बारीकियों और रंगों का अनोखा संयोजन देखने को मिलता है. लिओनार्दो की चित्रकारी की सबसे बड़ी विशेषता थी ङ्क उनकी प्रकृति को गहराई से देखने की क्षमता और प्रकाश और छाया का प्रयोग.

वैज्ञानिक सोच और आविष्कार- लिओनार्दो सिर्फ चित्रकार ही नहीं बल्कि एक महान वैज्ञानिक भी थे. उन्होंने कई यांत्रिक यंत्रों और मशीनों के डिज़ाइन बनाए, जिनमें से कई तकनीकें बाद में विकसित हुई.

उनके प्रमुख आविष्कार और विचार थे- उड़ने वाली मशीन , टैंक और हथियारों के डिज़ाइन, ह्यूमन एनाटॉमी (मानव शरीर संरचना) पर गहन अध्ययन, हाइड्रोलिक इंजीनियरिंग और ब्रिज डिज़ाइन

उन्होंने शरीर रचना का अध्ययन करने के लिए शव विच्छेदन भी किया और सैकड़ों स्केच बनाए. उनके बनाए एनाटॉमिकल ड्रॉइंग्स आज भी मेडिकल विज्ञान के लिए अद्भुत माने जाते हैं.

मूर्तिकला और वास्तुकला- लिओनार्दो ने मूर्तिकला और वास्तुकला में भी योगदान दिया. यद्यपि उनकी बहुत सी मूर्तियाँ समय के साथ नष्ट हो गईं, लेकिन उनके द्वारा बनाई गई कांस्य की घुड़सवार प्रतिमा और फ्लोरा की मोम से बनी आवक्ष प्रतिमा उनके कौशल का प्रमाण हैं. उन्होंने इटली के कई चर्चों और भवनों की डिज़ाइनिंग में भी योगदान दिया.

जानकारी

तितली क्या सूंघ सकती है?

तितलियाँ प्रकृति की सबसे खूबसूरत रचनाओं में से एक हैं. उनके रंग-बिरंगे पंख और नाजुक उड़ान देखकर मन मोहित हो जाता है. लेकिन क्या आप जानते हैं कि तितलियाँ सूंघ भी सकती हैं? हाँ, यह बिल्कुल सत्य है! तितलियाँ न केवल सूंघ सकती हैं, बल्कि उनकी गंध की क्षमता इतनी तेज होती है कि वे अपने आसपास की दुनिया को बिना नाक के ही समझ लेती हैं. यह लेख तितली की गंध इंद्रिय पर आधारित है, जहाँ हम वैज्ञानिक तथ्यों के माध्यम से समझेंगे कि तितली कैसे सूंघती है, क्यों सूंघती है और इसके क्या फायदे हैं.

तितली की गंध इंद्रिय- नाक की जगह क्या काम करता है?- मानवों की तरह तितलियों के पास नाक नहीं होती है, लेकिन वे गंध को महसूस करने में माहिर होती हैं. उनकी गंध की इंद्रिय उनके एंटीना में छिपी होती है. एंटीना तितली के सिर पर दो लंबी, पतली संरचनाएँ होती हैं, जो हजारों छोटे-छोटे रसायन ग्राही से ढकी होती हैं. ये रसायन ग्राही हवा में घुले रसायनों को पकड़ते हैं और तितली के मस्तिष्क तक संकेत भेजते हैं.

तितली क्यों और कैसे सूंघती है?- तितलियाँ गंध का उपयोग मुख्य रूप से तीन उद्देश्यों के लिए करती हैं-

भोजन की तलाश- तितलियाँ अमृत पर निर्भर होती हैं. वे फूलों की मीठी गंध को सूंघकर सही पौधे चुनती हैं. उदाहरण के लिए, कुछ तितलियाँ सड़ी हुई फलों की गंध को पसंद करती हैं, जो उनके लिए भोजन का संकेत होता है.

साथी की खोज- प्रजनन के समय, नर तितली फेरोमोन छोड़ती है, जिसे मादा एंटीना से सूंघकर साथी ढूंढती है. यह प्रक्रिया इतनी सटीक होती है कि तितली सैकड़ों अन्य गंधों में से सही फेरोमोन को पहचान लेती है

अंडे देने के लिए पौधे चुनना- मादा तितली अपने एंटीना से पौधों की गंध सूंघकर तय करती है कि कहाँ अंडे दें, ताकि उनके बच्चे (कैटरपिलर) सही भोजन पा सकें.

तितली की गंध क्षमता इतनी तेज होती है कि वे इंसानों से कहीं ज्यादा सूक्ष्म गंधों को महसूस कर सकती हैं.

आर्ट एंड क्रॉफ्ट

पेपर आकाश कंदील (लटकन लालटेन)

दिवाली का त्योहार रोशनी, रंग और सजावट का प्रतीक है. इस दिन घर को सुंदर दीपकों, झालरों और रंगोली से सजाया जाता है. लेकिन अगर बच्चे खुद अपने हाथों से कोई क्राफ्ट बनाएं, तो त्योहार का मज़ा और भी बढ़ जाता है. ऐसा ही एक आसान और मजेदार क्राफ्ट है ङ्क पेपर आकाश कंदील , जिसे लटकन लालटेन भी कहा जाता है. यह न केवल घर की शोभा बढ़ाता है, बल्कि बच्चों की रचनात्मकता को भी उजागर करता है.

आवश्यक सामग्री- रंगीन4 या क्राफ्ट पेपर - 2 शीट, पैमाना और पेंसिल, कैंची गोंद, रिबन या धागा, बल्ब

स्टेप-बाय-स्टेप गाइड- पेपर आकाश कंदील कैसे बनाएं?

1. पेपर को मोड़ें और लाइनें खींचें- एक रंगीन ए-4 पेपर को लंबाई में आधा मोड़ें. अब बंद किनारे से लगभग 1 सेंटीमीटर छोड़कर पेंसिल से समानांतर लाइनें खींचें.

2. पेपर को काटें- लाइन के अनुसार कैंची से काटें, लेकिन ध्यान रहे कि ऊपर छोड़े गए मार्जिन तक ही कट लगाना है.

3. सिलेंडर आकार दें- अब पेपर को खोलें और दोनों सिरों को जोड़कर सिलेंडर की तरह रोल कर लें. किनारे गोंद से चिपका दें.

4. बॉर्डर और झुमके लगाएँ- दूसरे रंगीन पेपर से 2ङ्क2 सेमी चौड़ी स्ट्रिप्स काटें और कंदील के ऊपर-नीचे चिपकाएँ. चाहें तो नीचे से पतली पट्टियाँ काटकर झुमके जैसी सजावट जोड़ें.

5. लटकाने के लिए रिबन लगाएँ

ऊपर की तरफ रिबन या धागा चिपकाकर हैंडल बना दें. अब चाहें तो अंदर रखकर इसे और आकर्षक बना सकते हैं.

फायदे और सीख- बच्चों की कल्पनाशक्ति और हाथों की कौशल को बढ़ावा मिलता है.

त्योहार की तैयारियों में उनका योगदान बढ़ता है, जिससे आत्मविश्वास भी बढ़ता है.

घर की सजावट में एक नया और अनोखा रंग जुड़ता है.

पेपर आकाश कंदील (लटकन लालटेन) दिवाली के लिए एक बेहतरीन छ्वङ्घ क्राफ्ट है. यह आसान, कम खर्चीला और पर्यावरण के अनुकूल है. इस दिवाली, अपने बच्चों के साथ इसे बनाइए और त्योहार की रोशनी में उनके हाथों की बनाई रचनात्मकता को चमकाइए.

कविता

गेंद

मेरी गेंद उछल-उछल कर
आगे जाती,
पीछे मुझे भगाती गेंद.
फिर भी मेरे हाथ न आती,
मुझको बहुत छकाती गेंद.

नीचे पटको ऊपर जाती,
फिर नीचे आ जाती गेंद.

तरह-तरह के खेल
दिखाकर,
चुपके से छिप जाती गेंद.

पानी में भी नहीं डूबती,
झट ऊपर आ जाती गेंद.

एक अकेली है वह लेकिन,
सबका मन बहलाती गेंद.

बूझो तो जानें

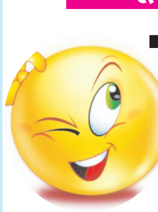

- बोल नहीं पाती, सुन नहीं पाती, आँखें भी नहीं पर सबको राह दिखाती.

उत्तर- दीपक

- तीन अक्षर का मेरा नाम, बीच कटे तो रिश्ते का नाम.

उत्तर- नमक

- जब मैं नया था तो लंबा था और जब बूढ़ा हुआ तो छोटा हो गया. मैं क्या हूँ?

उत्तर- एक मोमबत्ती

- मेरे पास चाबियाँ तो हैं, पर ताले नहीं. मैं क्या हूँ?

उत्तर-एक पियानो

- मेरे पास चार पैर हैं, पीठ है, पर सिर नहीं है. मैं क्या हूँ?

उत्तर- कुर्सी

- मैं ज़िंदा नहीं हूँ, पर बढ़ता हूँ; मेरे पास फेफड़े नहीं हैं, पर मुझे हवा चाहिए; मेरे पास मुँह नहीं है, पर पानी मुझे मार देता है. मैं क्या हूँ?

उत्तर- आग

हंसी-ठिठोली

- पपीताराम- यह थप्पड़ गुस्से से मारा है, या मजाक से?
  चेलाराम- गुस्से से
  पपीताराम- फिर ठीक है, मजाक मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं है
- टीचर-बताओ, ताजमहल किसने बनवाया है?
  चेलाराम- मैम, ठेकेदार ने!
- चेलाराम- मम्मी, मुझे खाने को ऐसा दो जो कभी खत्म न हो.
  माँ - ले बेटा, च्युइंगम खा ले.
- टीचर- सबसे ज्यादा तेज क्या दौड़ता है?
  चेलाराम =मोबाइल डेटा जब खतम होने वाला हो.
- डॉक्टर- आपका लड़का पागल कैसे हो गया?
  पिता =वो पहले जनरल बोगी में सफर करता था, डॉक्टर= तो इससे क्या?
  पिता-लोग बोलते थे थोड़ा खिसको, थोड़ा खिसको, तो यह खिसक गया.

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें .**

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर- सूरज में अंतर 2. टोकरी की डिजाइन 3. लड़के का जूता 4. लड़के के पौधे के पत्ते